संजीव के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

मन्जू कुमारी,
प्रो. सचित्रा मलिक

हिन्दी साहित्य के समकालीन कथाकारों में संजीव एक बहुचर्चित और बहु प्रशंसित नाम है। उन्होंने अपने लेखन में उपेक्षित तथा शोषित दलित वर्ग को विषय बनाया है। संजीव के उपन्यासों में ग्रामीण, आँचलिक, मेहनतकश मजदूर वर्ग, पिछडे तथा शोषित वर्ग और अंधविश्वास के नाम पर स्त्री शोषण, पीड़ा और दमन का चित्रण भी प्रस्तुत हुआ है। वस्तुतः संजीव मूलरूप से पिछड़े और उपेक्षित क्षेत्र की दर्दनाक व्यथा को वाणी देने वाले कथाकार हैं। संजीव ने अधिकाशंत अपने लेखन में आदिवासी जनजातीय लोगों की सामाजिक, आर्थिक, मानसिक समस्याओं तथा उनके पिछड़ेपन को केन्द्र में रखा है। बिहार और झारखण्ड के आदिवासी जीवन को संजीव ने सैलानी दृष्टि से न देखकर गहरी सगात्मकता के साथ वंचित किया है। वर्तमान में विकास के नाम पर जनजातियों पर होने वाले शोषण दमन की संजीव ने बारीकी से वर्णित किया है। आदिवासी लोगों के दमन और शोषण तथा पुलिस द्वारा उनके फर्जी एन्काउंटर के कारण पनपने वाले अपराध की भी उन्होंने पहचान की है। संजीव ने अपने उपन्यासों में इन सब समस्याओं के बीच स्त्री विमर्श भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में महिलाओं के साथ हुए अत्याचार और शोषण का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। नारियों को कैसे अपने ही परिवार जनों से अपनी पहचान के लिए या अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया है। दूसरी और स्त्री को अंधविश्वास के चलते ओझाओं के द्वारा उन्हें डायन घोषित कर पैसे की कमाई और योन-सुख की तृप्ति का माध्यम बनाया जाता है। कभी जातिवाद के नाम पर उनके साथ शोषण किया जाता है तो कभी रिश्तों के नाम पर साथ ही भूत बाधा भगाने के लिए महिला के घर वालों से रिश्वत के रूप में पैसे, शराब, मुर्गा और बकरा आदि लेते है। आदिवासी लोग तंत्र-मंत्र में बहुत विश्वास करते है। देवताओं को मानने के लिए ये तंत्र साधना भी करते है। ये मानते है कि तंत्र-मंत्र अथवा टोना-टोटका करने से सफलता मिलती है। संजीव के उपन्यासों में इन सब समस्याओं से जूझती नारी के जीवन को दर्शाया गया है। अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा के लिए आत्म संघर्ष करना पड़ता है और अत्याचार, बलात्कार, अपमान आदि से संबंधित घटनाओं से जूझते हुए अपना दम तोड़ती नारी का चित्रण किया गया है। चाहें वो पात्र 'धार' उपन्यास की मैना हो फिर 'किसनगढ़' के अहेरी' उपन्यास की चाँदनी होने सर्कस उपन्यास में 'झरना' नाम की लड़की की घटना भी इन सब समस्याओं से जूझती नजर आती है। संजीव के उपन्यासों में स़्त्री की स्थिति का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

संजीव का प्रथम उपन्यास 'किसनगढ़' के अहेरी' है इसमें निम्न वर्ग के जीवन संघर्ष एवं पूँजीपतियों की काली करतूतों को दर्शाया गया है। शोषण के चक्रव्यूह में निम्न वर्ग को फँसकर जीवन जीना पड़ता है। इस उपन्यास में किसनगढ़ गाँव के माध्यम से आजादी के बाद सामंती व्यवस्था या जमींदारी का वगर्णन है। किसनगढ़ गांव की कहानी दो वर्गों को दर्शाती है। एक उच्च वर्ग और निम्न वर्ग हे। ज्योतिष बाबा, कालिका पंडित, ब्रहमचारी बाबा और चेतूबाबा जैसे ढ़ोंगी साधु-सन्यासियों द्वारा पाप-पुष्य तथा अंधविश्वास की आड़ में निम्नवर्ग की स्त्रियों को योन शोषण किया जाता है दूसरी

और नरपति सिंह, इकबार सिंह, रूपई और उद्धान तिवारी जैसे उच्चवर्गीय लोग वर्ण व्यवस्था, जातिवाद तथा सामंति मानसिकता के कारण दलितों एवं गरीबों पर अत्याचार करते है। संजीव के इस उपन्यास में उच्चवर्गीय समाज की ढ़ोंगी परम्परा तथा धार्मिक आंडबरों को दर्शाया गया है। ब्रहमचारी की भानजी राधा विधवा हो जाती है तब उसका मुंडन करना धार्मिक अंधविश्वास का परिचय देता है। अन्त में विधवा राधा अपने तथा परायों के शोषण पूर्वक व्यवहार से परेशान होकर आत्महत्या कर लेती है। किसनगढ़ गांव के ठाकुरों में लड़कियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता है, क्योंकि कहीं आगे चलकर लड़कियों की वजह से उन्हें सिर न झुकाना पडे। इस उपन्यास में स्त्री स्थिति का चित्रण कई रूपों में किया गया है। कहीं पर विधवा राधा की कहानी हे तो दूसरी तरफ चाँदनी, सोना और मटरू की पत्नी की कहानी है। असफलता, पिछड़ापन, धार्मिक अंधविश्वास, जाति भेद, नारी शोषण तथा बंधुआ मजदूरी प्रथा आदि के कारण यह क्षेत्र कराह रहा है। जातीय समीकरण और शोषण के चलते प्रगति अवरूद्ध हो गयी है। गांव की नई पीढ़ी के रूप में ज्योतिबाबा का बेटा जय किसनगढ़ के निम्न वर्ग के लोगों के पक्ष में गांव के उच्च वर्ग के लोगों के विरोध करता है। इन सबके बीच वह निम्न जाति की चाँदनी से विवाह कर लेता है, लेकिन ज्योतिबाबा और अन्य लोगों को मंजूर नहीं। इसलिये पुलिस की सहायता से षडयन्त्र कर जय की हत्या कर देते है। चाँदनी पर बहुत अत्याचार किया जाता है। उसका मानसिक और शारीरिक शोषण किया जाता है। चाँदनी का सामूहिक बलात्कार किया भी जाता है। इस उपन्यास में जमींदार ज्योतिषी बाबा धर्म की आड़ में दलित तथा पिछडी जाति की औरतों का शारीरिक शोषण करता है। लेखक कहता है- ‘‘गजब का फूल-फल उठा था उसका धंधा गांव में। हाथ की रेखाएं पढते-पढते बदन की सारी रेखाएं पढ़ डालते।’’

1. इस प्रकार से लेखक ने स्वंय अपने शब्दों में लिखा है कि किस तरह से महिलाओं का शोषण होता है कभी जाति के नाम पर तो कभी अंधविश्वास के नाम पर होता है। पिछडी जाति की औरतें दोख उतरवाने के लिए जमघट लगाए ब्रहमबाबा के चैरा पर जमघट लगाए रहती है। ज्योतिषी बाबा दलित और पिछडे जाति की औरतों को अपनी सम्पत्ति समझते है। राजा और सोना जमींदार के यहां काम करते है। सोना मवेशियों के गोबर से उपले पाथती है। जंगल में पालश के पत्ते और ईंधन के लिए लकड़ी तोड़ती है। भैंसों-बैलों आदि मवेशियों की नाद साफ करती है। राजा मवेशियों की रखवाली करता है। अपने घर में काम करने वाली सोना का ज्योतिषी बाबा खेत में पकड़ लेते है। ‘‘आहट भाप नहीं पाई सोना और जनऊ कान पर चढाए ही पीछे से गंझीटे में पकड़ कर ले गए बाबा। सोना ने चीखना चाहा, मगर लोक-लाज के भय से चीख न पाई और बाबा ने उसे ब्रहमणी बना ही दिया’’।

2. इस उपन्यास में और भी कई स्त्री पात्र है जो उच्च वर्ग का शोषण झेल रही हैं। उन सब अत्याचार से दुःखी होकर दलित मटरू की पत्नी भी गांव छोड़कर भाग जाती है। किसनगढ़ के अहेरी’ उपन्यास में उच्च वर्ग का लड़का जय जब निम्न वर्ग की लडकी चाँदनी से विवाह करता है तो लड़के के पिता अपने आप को अपमानित महसूस करता है। इस सम्बन्ध में लेखक स्वयं कहता है- ‘‘वह विजातीय भी है। पहली बार कोई बड़े घर की दुल्हन के

मुख पर घुँघट नहीं था और पहली बार बाबा को पतोहू की जाति पूछने पर जबाव मिला था। बेचारे बाबा। सरेआम पगड़ी उछल गई।

3. किसानगढ़ के अहेरी’ उपन्यास में ज्योतिषी बाबा जय और चाँदनी के विवाह के विषय में कहता है- ‘‘ रखैल होती तो कोई बात न थी। बड़कवो और पैसे वालों में तो वह आम प्रचलन है।’’

4. इस बात से ही पता चलता है कि बाबा खुद कितने गलत काम करते है। यहाँ तक की चाँदनी तक को भी नहीं छोड़ता। अंत में चाँदनी खुदकुशी कर लेती है। इस उपन्यास में स्त्रियों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया गया है। इस उपन्यास में प्रत्येक स्त्री पात्र अपनों से भी और परायों से भी जूझती नजर आती है ओर अन्त में हार मान लेती है। पूरे उपन्यास में नारी शोषण का रेखाकंन लेखक ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक ने इसी कड़ी में अपना दूसरा उपन्यास सर्कस लिखा है, जिसमें लेखक ने उपेक्षित कलाकारों की व्यथा और सर्कस के अन्दर की दुनिया का चित्रण प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में मुख्य नारी पात्र तो झरना है, लेकिन चैदह वर्ष की चन्द्रा के मानसिक तथा शारीरिक शोषण का चित्रण भी किया गया है। सर्कस में काम करने वाली चन्द्रा को सर्कस मालिक एक अनाथालय से खरीदकर लाता है। बहुत सी लड़कियाँ सर्कस में ही पलती और जवान होती है, उनमें से एक चन्द्रा भी है, जिसका शारीरिक शोषण अपने प्रशिक्षक रघुनाथ द्वारा ही किया जाता है। चन्द्रा जब इसकी शिकायत सर्कस मालिक नियोगी से करती है तो वह भी चन्द्रा को खरी-खोटी सुना देता है। चन्द्रा की कोई सुनवायी नहीं होती। चन्द्रा इस विषय में अपनी साथी कलाकार (गीता) से कहती है- ‘‘बहन, तुझे क्या बताऊँ, रात-दिन मैं किस असुरक्षा के बीच घिरी पाती हूँ अपने को अनाथाश्रम से खरीदकर ले आए है नियोगी साहब। अब उन्हें रीता भा गई है, तो रघुनाथ ने लपक लिया है मुझे।’’

5. इस कथन से स्पष्ट है कि सर्कस मालिक तथा प्रशिक्षक द्वारा नारियों का शारीरिक शोषण किया जाता है। इस उपन्यास में ‘झरना’ की माँ मर चुकी है और पिता रामूदादा सर्कस में जोकर का काम करता है। सर्कस मालिक सर्कस में आने वाली लड़कियों का मानसिक और शारीरिक शोषण करते है। इन कलाकारों को सर्कस मालिक की मर्जी से जीवन जीना पड़ता है। रामूदादा सर्कस की यथार्थपूर्ण जीवन शैली से भलीभांति परिचित थे। इसलिए वो झरना को सर्कस में आने के लिए मना करते है। लेकिन पिता के मना करने पर भी झरना सर्कस का जीवन जीने लगती है। सर्कस में जिन्दगी व्यतीत किए बूढ़े रामूदादा अपने बेटी को चेतावनी देते है- ‘‘बेटी तुम्हें एक बार फिर कह रहा हूँ, लौट जाओं घर। यह दुनिया दूर से ही देखने में अच्छी है।’’

6. लेकिन झरना रामूदादा की बात नहीं सुनती। ‘झरना’ का नाम हर सर्कस मालिक अपनी इच्छा से बदल देता है। वह रूपा, सीता, गीता, कामिनी और सुजाता आदि नाम स्वीकार कर सर्कस की दुनिया में खुब घुमती है। इस विषय में सैंड साबह कहते हैं- ‘‘तुम्हें कोई उज्र तो नहीं अगर तुम्हें हम कामिनी से भैरवी कर दें?’’ सैंड साबह की आँखे हँस रहीं थीं।- जी, जी नहीं।’’

7. इन सबके चलते झरना इस यात्रा से पूरी तरह टूट जाती है। अतः वह सर्कस की दुनिया से मुक्ति चाहने लगती है। मुक्त होकर वह चित्रकार विकास से शादी करती हे। लेकिन उसकी शादी भी अधिक समय नहीं चल पाती तो वहाँ भी उसका मोहभंग हो जाता है और वापस सर्कस के तंबू में आ जाती है। पिता के मना करने के बावजूद भी सर्कस की दुनिया में फिर चली जाती है। मुखर्जी बाबू कहते हैं- ‘‘सर्कस तो एक ढकोसला है बेटी जिन्दगी तो ऐसी-ऐसी कवायदें कराती है कि ...... खैर, तुम्हें मिल गया न जवाब।’’

8. सर्कस का तंबू एक मायाजाल है जो इसमें एक बार चला गया तो उसमें फसकर ही रह जाता है, चाहकर भी उससे नहीं निकल पाते। झरना जब सर्कस के तंबू में प्रवेश करती है तो वहाँ का माहौल देखकर स्तब्ध हो जाती है। सर्कस के बारे में उसकी विचारधारा बिल्कुल अलग थी, लेकिन प्रत्यक्ष में सर्कस का जीवन देख भोगकर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचती है- ‘‘क्या इसे ही कहते हैं सर्कस फोबिया? इस बेबसी का नाम एडाप्शन है? बीच-बीच में भावुक होकर सोचा करती, इतनी जहालत पर भी लोग बगावत क्यों नही करते, कैसे चुपचाप सह लेते हैं वह गुरबत? आज स्वंय अपने प्रश्न के उत्तर में प्रति प्रश्न बनकर अटक गई है अपनी नजरों के सामने।’’

9. सर्कस के मालिक जानते है कि सर्कस कलाकरों का अपना घर नही होता। सर्कस में रहकर खानाबदोशी की जिन्दगी जीने वाले कलाकारों के लिए बाहर की दुनिया भी शून्य है। इन कलाकारों का कोई घर नही होता न सर्कस के अन्दर न सर्कस के बाहर। इन सब परिस्थितियों का फायदा सर्कस मालिक उठाते हैं तथा कलाकारों का मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक शोषण करते है। इन सभी समस्याओं से जूझती ‘झरना का पूरे उपन्यास में लेखक ने चित्रण प्रस्तुत किया है। नारी स्थिति के यथार्थ का चित्रण करते हुए संजीव को अगला उपन्यास ‘धार’ इस उपन्यास में कोयला क्षेत्र के आदिवासियों की रचनात्मक संघर्ष गाथा है। उपन्यास के केन्द्र में संथाल परगना का बासगड़ा क्षेत्र और वहाँ के आदिवासी है। उपन्यास की कथा दो भागों में विभाजित है। उपन्यास के पूर्वार्द्ध में संथाल आदिवासी जीवन और पूंजीपति वर्ग द्वारा किया जाने वाला अमानवीय शोषण चित्रित हुआ है और उत्तरार्द्ध में नई चेतना और संघर्ष की रचनात्मक पहल मिलती है। कथा के केन्द्र में आदिवासी नारी मैना है। जो अशिक्षित होने के बावजूद सजग और विद्रोही है। ‘धार’ उपन्यास में संथाल जनजाति दो वक्त की रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करती नजर आती है। तेजाब कारखाने से खेतीबाड़ी, कुआँ तथा तालाब का पानी खराब हो गए है। संथालों के खेत बंजर बन गये है। उपन्यास की नायिका मैना पीने का पानी न मिलने पर कहतीं है- क्या करे? कहाँ से ले आए पानी? कुए, तालाब सबमें तो तेजाब है। स्टेशन पर सिपाही पानी लेने देते नही है।’’

10. मैना गांव में होने वाले शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है तो उसका विरोध देखकर उसके साथ जालसाजी करके उसको जेल में डाल दिया जाता है। मैना जेल से सजा काटकर जब रिहा होती है तब वह स्वंय पर जेल में हुए अत्याचार के बारे में बताती हे- ‘‘जेल में जेलर हमरा साथ जबर्दस्ती किया, उसी खातिर बच्चा उसका मुँह पे मार के हम चला आया’’

11. मैंना का जेलर बलात्कार करता है जिसके कारण जेल में उसे एक बच्चा होता है। इस बच्चें को जेलर मंगर नाम के युवक के सिर मढ़ देता है। मंगर अब मैना के साथ ही रहने लगता है। मैना का बाप और उसका पति भी उसे छोड देता है। मैना बाहरी लोगों के द्वारा किये गये आदिवासी समाज पर शोषण और दमन से भली-भांति परिचित है। मैना अपने लोगों को जाग्रत करती हे। नेता, पुलिस, अफसरों द्वारा आदिवासी महिलाओं के साथ किये जाने वाले शारीरिक शोषण के बारे में मैना कहती है- ''धन्न मनाऊँ रेलवई पुलिस का, हमको सिलतोडी कराता, हमरा बहिना-बेटी माँ के साथ रंडीबाजी करता कि हमको दू-चार पैसा भेंटा जाता......... इज्जत कभी नई बेचा, आज हम सब करता, आदत पड गया है, बल्कि कहे, इसके बिना गुजारा नई''

12. मैना चकलाघर चलाने की निदा करती हुई कहती है- ''तो इसका मतलब यह हुआ कि आसनसोल लक्षीपुर की तरह यहाँ भी रात को चकला चलने लगा आज उनके घरों की लड़कियाँ चकले में आ बैठी है। यही आसन लगा। यही अच्छा लगा। छी''

13. शारीरिक शोषण तथा मानसिक शोषण से तंग आकर मैना अपनों का भी विरोध करती है बाहरी लोगों का भी मैना आदिवासियों को जाग्रत करने का कार्य पूरे प्रयत्न के साथ करती है। उसे उसके आस-पास रहने वालें लोगों के क्रोध को झेलना पड़ता है। 'धार' उपन्यास में मैना की माँ को डायन घोषित कर दिया जाता है मैना की माँ और मैना ने मिलकर महेन्द्र की तेजाब की फैक्ट्री के विरूद्ध आवाज उठायी थी। इसीलिये उसे सीताराम पंडित और महेन्द्र बाबू के षडयंत्र से डायन घोषित किया गया और उसे मार-मारकर गांव से निकाल दिया जाता है। जानगुरू मैना को भी डायन घोषित कर देता है। गांव की कई औरते भी मैना को डायन मान लेती है। तो इस पर मैना विरोध करते हुए जानगुरू की गर्दन पकड़ लेती है और कहती है ''खा जाहिर थान का कसम। खा मा◌ॅरा बुरू का कसम। खा बधना देवी की कसम कि तू घूस नही खाता है सच बोल रआ है। अरे ओकरा मे तोर चेहरा लौक रहा है तो तू हो गया डायन? तोरा घर में हम भेड़ मार के फेंक दे तो तू हो गया हतियारा.............?''

14. इस तरह से मैना को अंधविश्वासों को भी झेलना पडता है। कोयला अंचल की संथाल जनजाति बाहरी लोगों के शोषण से त्रस्त दिखाई देती है। मैना कहती है- ''हमरा कोई पता-ठिकाना नई।......... काये नई इस खातिर कि हम अपना किस्मत उनका पास बंधक रख छोडा है। कोइला का खजाना पे हम रखता है, फिर भी कंगाल? कब तक अइसा माफिक चलेगा?''

15. आदिवासी समाज में रीति-रिवाजों एवं अंधविश्वास को बहुत महत्व दिया जाता है। यहाँ होते हुये भी आदमी का श्राद्ध कर देते है। मैना अपना पति होते हुए भी मंगर के साथ रहती है जिसके बारे में लेखक लिखता है ''चबूतरे पर सोंतालो की परम्परा के अनुसार कुलटा मैना का श्राद्ध हो रहा था''

16. पूरे उपन्यास में केवल शोषण भरे रूप का ही चित्रण किया गया है। जब सारे गांव का पानी दूषित हो जाता है तो मैना गांव से शहर की ओर जाने वाली पाईपलाईन को तोडती है। इस विषय में लेखक कहते है ''साहब डब्बे

से दौड़कर हथौडा उठा लाई और दोनों हाथों से उसने पाईप के ज्वाइंट पर दे मारा। देखते ही देखते फौव्वारे की शक्ल में पानी का स्त्रोत खुल गया। तालियाँ बज उठी सबने चुल्ली भर-भर पानी पिया।' सरकारी अफसर और कोयला माफियाओं द्वारा मिलकर मैना को मरवा देते है। परन्तु मैना ने अपनी संथाल जाति में एक नई जाग्रति उत्पन्न कर दी थी। उसने एक नई सामाजिक चेतना को जाग्रत किया। मैना सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करती रही।

निष्कर्ष: कहा जा सकात है कि आजादी के बाद भी नारी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। समकालीन हिन्दी उपन्यासों में वर्णित आदिवासी नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय और सोचनीय है। स्त्री के ऊपर हो रहे अत्याचार और अन्याय को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। इस समाज में किस तरह से ठेकेदार, महाजन, पुलिस तथा अपने लोगों के बीच नारी का जीवन शोषण ग्रस्त है। आदिवासी नारी जीवन संघर्ष की अनेक छवियाँ जीवनंतता के साथ अंकित हैं। आदिवासी नारी संघर्ष पूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर है। पुरूषों की तरह जीवन जीने तथा स्वतन्त्र घूमने की आजादी के साथ भी स्त्री का शोषण किया जाता है, कभी अंधविश्वास के नाम पर तो कभी रोजगार के नाम पर इन्हें छला जाता है। गैर-आदिवासियों द्वारा दिये गये प्रलोभनों के इस झाँसे में फंसकर दैहिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण झेलने को विवश होना पड़ता है। संजीव ने अपने उपन्यासों में स्त्री के यथार्थ का चित्रण बहुत आकर्षित ढंग से प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यासों में स्त्री की यथार्थ स्थिति का वर्णन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. किसनगढ़ के अहेरी, संजीव, पृष्ठ सं0-3
2. वही, पृष्ठ सं0 - 31
3. वही, पृष्ठ सं0 - 111
4. वही, पृष्ठ सं0 - 111
5. सर्कस, संजीव, पृष्ठ सं0- 36
6. वही, पृष्ठ सं0 - 19
7. वही, पृष्ठ सं0 - 127
8. वही, पृष्ठ सं0 - 184
9. वही, पृष्ठ सं0 - 125
10. धार, संजीव, पृष्ठ सं0 - 58
11. वही, पृष्ठ सं0 - 12
12. वही, पृष्ठ सं0 - 56
13. वही, पृष्ठ सं0 - 114
14. वही, पृष्ठ सं0 - 123
15. वही, पृष्ठ सं0 - 57
16. वही, पृष्ठ सं0 - 55
17. वही, पृष्ठ सं0 - 166

वितस्ता २०२१